उद्देश्य (Objective) :-

इस पाठ के अंतर्गत भारत में औद्योगिक विकास के इतिहास का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसके अध्ययन के बाद छात्र जान सकेंगे :-

(i) भारत में औद्योगिक विकास के विभिन्न तथ्यों को

(ii) भारत में उद्योगों की प्रगति को विभिन्न चरणों या विभिन्न अवधि में देखेंगे।

(iii) स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विभिन्न योजना काल में उद्योगों की प्रगति या औद्योगिक विकास को समझ पायेंगे।

परिचय (Introduction) :-

किसी भी अर्थव्यवस्था में उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्यतः उद्योग से अर्थ वैसे आर्थिक क्रियाओं से है जिनका सम्बन्ध सेवा या वस्तुओं के उत्पादन या संवर्धन से है। जब एकसमान वस्तुओं के उत्पादन में अनेक संस्थाएं लगी रहती हैं तो यह सभी संस्थाएँ मिलकर उद्योग कहलाती हैं।

इस देश की आर्थिकावस्था के विकास में उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है इसे किसी देश का विकास का सूचक माना जाता है।

## भारतीय औद्योगिक विकास का इतिहास

भारतीय औद्योगिक विकास के क्रमबद्ध अध्ययन हेतु इसे चार चरणों में विभाजित किया जाता है —

(1) 1850 ई० से पूर्व (औद्योगिक विकास का काल)
(2) 1850 ई० से प्रथम विश्वयुद्ध के आरंभ तक का काल
(3) प्रथम विश्वयुद्ध से स्वतंत्रता प्राप्ति तक की अवधि
(4) स्वतंत्रता प्राप्ति से आज तक की अवधि

=) 1850 ई० से पूर्व का काल :—

भारतीय उद्योगों का प्राचीन इतिहास अत्यन्त गौरवमय रहा है। मुगलकाल में आये प्रसिद्ध पर्यटक थेवेनियर ने भारत के औद्योगिक उत्कर्ष के बारे में लिखा है कि "

" भारत में बनी हुई वस्तुएं इतनी हल्की एवं सुन्दर होती है कि हाथ में होते हुए भी यह आभास नही होता है कि वे हाथ में है " शाही औद्योगिक आयोग ने सूती वस्त्रों के सम्बन्धों में भी अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि

" जिस समय आधुनिक उद्योग धन्धों की जन्मभूमि पश्चिमी यूरोप में असभ्य जातियों का निवास था, उस समय भी भारत अपने शासकों की सम्पत्ति और शिल्पियों की उत्कृष्ट कला के लिए प्रसिद्ध था।

इस प्रकार 1850 से पूर्व भारत का औद्योगिक विकास काफी समृद्ध था।

यहाँ का वस्त्र उद्योग काफी विख्यात था। टी० एन० मुखर्जी के अनुसार " 20 गज लम्बे और एक गज चौड़ी बढ़िया मलमल के टुकड़े को एक अंगूठी से निकाला जा सकता था। जिसे बनाने में छः महीने लगते थे " अर्थात उस समय भारत की सूती वस्त्रों की क्वालिटी उत्तम एवं श्रेष्ठ थी। इन सूती वस्त्रो के अतिरिक्त कश्मीर, अमृतसर और लुधियाना के शाल भी प्रसिद्ध थे।